शेख़ फ़रीद – सबद १०७
फरीदा गरबु जिन्हा वडिआईआ धनि जोबनि आगाह ॥
सलोक, गुरु अर्जन, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८३

फरीदा गरबु जिन्हा वडिआईआ धनि जोबनि आगाह ॥
खाली चले धणी सिउ टिबे जिउ मीहाहु ॥१०५॥

सार: अहं अक्सर बड़ी ही सूक्ष्मता से मन को ऊँचा उठा देता है और स्वयं को मानसिक आसन के शीर्ष पर बिठा देता है। इस ऊँचाई से, व्यक्ति दुनिया में अपनी अहमियत को एक विकृत नज़रिए से देखने लगता है। हालाँकि, यह ऊँचाई असलियत पर नहीं, केवल कल्पना पर आधारित होती है। अहं जितना ऊपर उठता है, जीवन की सीधी-सादी सच्चाइयों से उतना ही दूर होता जाता है। जो शुरू में श्रेष्ठता जैसा महसूस होता है, वह अंततः असलियत से अलगाव का सूक्ष्म रूप बन जाता है। अंत में, अहं की यह ऊँचाई सच्चाई से दूरी को दर्शाती है, न कि किसी वास्तविक गरिमा को।

फरीदा गरबु जिन्हा वडिआईआ धनि जोबनि आगाह ॥
फ़रीद कहते हैं कि कुछ लोग अपनी हैसियत, धन और यौवन की शक्ति पर बहुत ज़्यादा घमंड करते हैं। यह झूठी श्रेष्ठता की भावना, अहंकार को बढ़ावा देती है।

खाली चले धणी सिउ टिबे जिउ मीहाहु ॥१०५॥
धन-दौलत होने के बावजूद वह खाली हाथ ही रह जाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे बारिश में छोटे-छोटे टीले बह जाते हैं। यह दर्शाता है कि भले ही हमारे पास ज्ञान हो लेकिन अहंकार हमारी उस क्षमता को समाप्त कर देता है जिससे हम ज्ञान को वास्तविक तौर से आत्मसात कर अंतर्दृष्टि पाते हैं। (१०५)

तत्त्व: गुरु अर्जन, हमें शेख़ फ़रीद के संदेश की याद दिलाते हुए, आग्रह करते हैं कि भले ही हम बहुत सा ज्ञान हासिल कर लें लेकिन अहंकार हमें उस ज्ञान को सही तरह से समझने से रोक सकता है। जो लोग अपनी हैसियत, दौलत और जवानी के नशे में फूले रहते हैं, उन्हें अंततः यह एहसास हो

ही जाता है कि जीवन की इस विशाल योजना में उनके पास असल में कितना कम है, ठीक वैसे ही, जैसे बारिश में मिट्टी का टीला बह जाता है। सच्ची समझ तभी उत्पन्न होती है जब ज्ञान के साथ विनम्रता भी जुड़ी हो।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com